Volume-7, No. 1 Feb.-2020, pp. Hin.43-46

उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं का पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन पर किये गये अध्ययन की समीक्षा

डॉ. मंजू शर्मा, शोध निर्देशिका
मिस. आसमा खातून, शोधार्थी (शिक्षा शास्त्र)
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान भारत।

सार

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार को विशेष ढांचे में ढाला जाता है तथा बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इन परिवर्तनों में शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रयोग जाता है। परिवार को शिक्षा का एक अनौपचारिक साधन माना गया है। बालक एक छोटे पौधे के समान होता है, उसके फुलने–फलने के लिए जितना खुला व स्वाभाविक वातावरण व अनुशासन मिलेगा, वह उतना ही उत्तम पल्लवित होगा। उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चे किशोरावस्था के आस–पास होते हैं, वह अधिकांशतः अपना निर्णय स्वयं लेते हैं। उनके व्यक्तित्व एवं उपलब्धियों पर अनुशासन के प्रकार का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जैसे– दमनात्मक अनुशासन, प्रभावात्मक तथा मुक्तयात्मक अनुशासन व्यवस्था। बालक के सर्वांगीण विकास में केवल विद्यालयी अनुशासन की ही नहीं अपितु पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसका बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द– परिवारिक वातावरण, अनुशासन, दमनात्मक अनुशासन, प्रभावात्मक अनुशासन, मुक्त्यात्मक अनुशासन

बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है तथा उसकी प्रथम अध्यापिका उसकी माता मानी जाती है। बालकों व बालिकाओं के चरित्र, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर उनके पारिवारिक वातावरण एवं माता–पिता के आपसी सम्बन्धों का सीधा प्रभाव बालकों के व्यवहारों पर पड़ता है। इस दिशा में किये गये विभिन्न शोध कार्यों से उपर्युक्त मान्यता एक तथ्य के रूप में स्थापित होती है कि घर में अभिभावक बालकों को जिस प्रकार के अनुशासन में रखते हैं, बालक तथा बालिकाओं का व्यक्तित्व उससे प्रभावित होता है, जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर भी अवश्य पड़ता है। आमतौर पर प्रत्येक परिवार के बालकों तथा बालिकाओं के साथ अभिभावक विभिन्न प्रकार के व्यवहार, उनको अनुशासन में रखने के लिए करते हैं। विशेष रूप से तीन प्रकार के अनुशासन को प्रयोग में लाया जाता है–दमनात्मक अनुशासन, प्रभावात्मक अनुशासन और मुक्त्यात्मक अनुशासन। अनुशासन की ये विचारधाराएं अभिभावकों तथा अध्यापकों दोनों के लिए लागू होती है। बच्चों के दृष्टिकोण से अभिभावकों द्वारा लागू की गई अनुशासन प्रणाली अधिक महत्वपूर्ण है। एक ओर अध्यापक उस अनुशासन प्रणाली का पालन करता है जोकि प्रशासनिक दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी हो, तो दूसरी ओर अभिभावक उस प्रणाली का पालन करते है जो उनके घर की व्यवस्था को सुचारू बनायें रखने तथा बालकों एवं बालिकाओं के विकास की दृष्टि से उपयोगी हो। यद्यपि दोनों का उद्देश्य अपने–अपने तरीकों से विद्यार्थियों का विकास करना ही है। इस सन्दर्भ में कुछ अभिभावकों का ध्यान पूरे परिवार की व्यवस्था पर अधिक होता है। हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार विद्यार्थी को बड़ा गौरवमयी स्थान दिया गया है परन्तु भारतीय परिवारों में विद्यार्थियों को एक औसत सम्मान की दृष्टि से देखा जा सकता है। अधिकांश परिवारों में अभिभावक बालक को छोटी–छोटी बात पर झिड़कते, गालियाँ देते है और उन्हें मारपीट तक भी करते हैं इस प्रकार के दमनात्मक अथवा एकाधिकारात्मक व्यवहार से बालक के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वह अन्तर्मुखी हो जाता है और जिन कार्यों से उसको माता–पिता रोकते है, उनको वह स्वप्नों दिवास्वपप्नों और कल्पनाओं से पूरा करने का विचार करता है। माता–पिता की अवहेलना और प्रताड़ना से विद्यार्थी अर्थात् बालक अन्तर्मुखी तो बनता ही है, उसके साथ बच्चा दबंग व उद्दण्डी भी हो सकता है। इस प्रकार बालक में स्वतंत्र रूप से निर्णय करने की योग्यता का समुचित विकास नहीं हो पाता है, जो कि वयस्क आयु में जीवन संघर्ष में अत्यंत आवश्यक होता है। यदि बालक अपने कार्यों एवं वस्तुओं का चुनाव स्वयं करे,

स्वयं निश्चित करे कि उसे क्या खाना है, क्या पहनना है, कौन–कौन सी पुस्तकें पढ़नी है, क्या–क्या कार्य करने हैं आदि कार्य करने की शक्ति उसमें उत्पन्न होती है, परन्तु यदि ये सब उसके माता–पिता निश्चित करें, तो उसे अपनी निर्णय शक्ति के उपयोग का अवसर ही नहीं मिलता है। इस प्रकार माता–पिता द्वारा अत्यधिक प्रताड़ित किये जाने वाले बालकों को जीवन में अनेक प्रकार की सामाजिक तथा व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके साथ–साथ जो अभिभावक बच्चों को अधिक दुलार करते हैं, वे बच्चे भी अधिक बहिर्मुखी होने के साथ–साथ माता व पिता पर अधिक आश्रित हो जाते हैं और इस प्रकार उनका विकास भी पूरी तरह सन्तुलित नहीं हो पाता है। अतः अभिभावकों द्वारा अधिक डांटने अर्थात् प्रताड़ित किये जाने वाले और आवश्यकता से अधिक प्यार किए जाने वाले दोनों तरह के बालकों में व्यक्तित्व संबंधी उलझने अर्थात् समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। व्यक्तित्व की उलझनों को दूर करने के उद्देश्य से व्यवहार चिकित्सालयों में लाये गये बालकों में बहुत से बालकों की व्यक्तित्व संबंधी परेशानियों का कारण उनके प्रति उनके माता–पिता का व्यवहार ही होता है। इसी प्रकार जो अभिभावक अपने बच्चों को आवश्यकता से अधिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, उन बच्चों के उद्दण्डी व दबंग बनने की पूरी सम्भावना रहती है, जो उसके भविष्य के लिए नुकसानदेह होती है। अतः अभिभावकों को बच्चों के साथ सन्तुलित व्यवहार करना चाहिए, जिससे बालक का सन्तुलित विकास हो सके और उसकी शिक्षा व्यवस्था पर सार्थक प्रभाव पड़ सके।

सिगमण्ड फ्रायड ने इस विषय में तादात्म्य के तत्व पर अधिक जोर दिया है। माता–पिता बच्चों से अधिक शक्तिशाली एवं कार्यशील होते हैं। अतः बच्चे के सामने वे एक आदर्श के समान होते हैं। बच्चा भी उन जैसा बनना चाहता है। इस प्रकार बच्चा माता–पिता में से किसी भी व्यक्तित्व के साथ अपने से तादात्मय स्थापित कर लेता है।

अध्ययन के उद्देश्य– बिना उद्देश्य के किसी कार्य को करना बालू के घर बनाने के समान है। प्रत्येक अध्ययन के लिए न्यादर्श के चुनाव से लेकर परिणाम निष्कर्ष निकालने तक की समस्त प्रक्रिया का आधार उस अनुसंधान कार्य के निर्धारित उद्देश्य ही होते हैं। प्रत्येक शोधकर्त्ता का उद्देश्य उपलब्ध सामग्री के विश्लेषण द्वारा कुछ सामान्य निष्कर्ष निकालकर ज्ञान को आगे बढ़ाना होता है। परन्तु शोधकर्त्ता का कर्त्तव्य है कि वह देश काल एवं परिस्थितियों की सीमाओं को लांघकर शत प्रतिशत शुद्ध निष्कर्ष निकाले। प्रस्तुत अध्ययन के महत्त्व पर विचार करने से विदित होता है कि समस्या शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करती है। अतः उस ओर कार्य करना समय और शक्तिदोनों का सदुपयोग करना है। समस्या का समाधान करने से पूर्व यह निश्चित करना अनिवार्य है कि उद्देश्य क्या हैं? वास्तव में उद्देश्य ही अंतिम लक्ष्य को निर्धारित करते हैं। जिसकी ओर किया गया कार्य अग्रसर होता है। किसी अध्ययन के स्वरूप न्यादर्श चयन से लेकर परिणाम एवं निष्कर्ष निकालने तक की समस्त प्रक्रिया का आधार उस अनुसंधान कार्य के उद्देश्य ही होते हैं। अतः इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं–

1. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक अनुशासन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन– सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन हमारी सहायता करता है कि अन्य शोधकर्ताओं ने सम्बन्धित समस्या के क्या हल निकाले है और कौन से प्रश्न अभी अनुत्तरित रह गये है यह शोधकर्ता की मद इस विषय पर भी करता है कि कहीं वह पुनः उसी विषय की तथा सैंपल की पुनरावृत्ति न हो जाये यह पूर्व कल्पनाओं के साथ महत्वपूर्ण सुझाव देने में भी सहायक होता है जिससे शोधकर्ता को शोध करते समय आसानी से आकड़े उपलब्ध हो जाते है।

भट्ट, सुधा (1991) पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया उसके निष्कर्ष में पाया गया पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

पाण्डे, आर0के0 (2000) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पूर्व किशोरावस्था की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन से निम्न निष्कर्ष निकाले–

1. वे बालिकाएं जो घर में उच्च नियन्त्रण में रहती है। मध्यम नियन्त्रण वाली बालिकाओं की अपेक्षा उच्च शैक्षिक निष्पत्ति प्राप्त करती है।

2. वे बालिकाएं, जिन्हें घरेलू वातावरण में संरक्षण एवं मध्यम स्तर का दण्डात्मक वातावरण मिलता है। विज्ञान में बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करती है।

3. जो बालिकायें घरेलू वातावरण में उच्च प्रोत्साहन पाती है। वे कम या मध्यम प्रोत्साहन पाने वाली बालिकाओं से विज्ञान में बेहतर उपलब्धि प्राप्त करती है।

बाला, निधि (2000) माता के व्यवसाय एवं परिवार की आय का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन जिसका उद्देश्य माता के व्यवसाय का बालको की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना एवं परिवार की आय का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना। उसके निष्कर्ष में पाया माता के गृहणी होने अथवा कामकाजी होने का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही होता है। तथा बालको के विकास में माता द्वारा दिए गये गुणात्मक समय का अधिक प्रभाव होता है। न कि अधिक मात्रा में समय दिये जाने का।

पीटर, पॉल (2002)
महाविद्यालय के चयन एवं उपस्थिति के प्रति अफ्रीकन, अमेरिकन एवं व्हाइट मेरी लेण्ड के माध्यमिक स्कूल के छात्रों की आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया इसका उद्देश्य, महाविद्यालय चयन एवं उपस्थिति के प्रति माध्यमिक स्कूल के छात्रों की आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना। निष्कर्ष निकला कि उच्च माध्यमिक विद्यालय में उन्हें महाविद्यालय प्रवेश के लिए तैयार नहीं किया जाता और इस समस्या के हल के लिए विद्यालय एवं महाविद्यालय के बीच कोई निश्चित नीति निर्धारित करना आवश्यक पाया गया।

शर्मा, मन्जू (2003) छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं के पारिवारिक लगाव, समायोजन एवं अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया इसका उद्देश्य, छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओ के पारिवारिक लगाव का तुलनात्मक अध्ययन करना। इसका निष्कर्ष निकला कि छात्रावास व परिवार में रहने वाली छात्राओं के पारिवारिक लगाव में अन्तर पाया गया, परिवार में रहने वाली छात्राओ की अपेक्षा छात्रावास में रहने वाली छात्राओं का समायोजन अच्छा पाया गया। यह अन्तर केवल भावात्मक समायोजन में पाया गया। तथा छात्रावास व परिवार में रहने वाली छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

गुप्ता, मधु (2005) शैक्षिक उपलब्धि पर परिवार की प्रकृति, पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावको की सहभागिता के प्रभाव का अध्ययन (शोधपत्र) इस अध्ययन का उद्देश्य– परिवार की प्रकृति (संयुक्त एवं एकल) का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना, परिवार की प्रकृति (संयुक्त एवं एकल) के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना, छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना, संयुक्त एवं एकल परिवार की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना, संयुक्त एवं एकल परिवार के अभिभावको की शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा अभिभावकों के शिक्षा में सहभागिता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना। जिसका निष्कर्ष निकला संयुक्त परिवार की छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि एकल परिवार की छात्राओ से अधिक पायी गयी, छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है। तथा संयुक्त एवं एकल परिवार के अभिभावक समान सहयोग करते है अपनी बालिकाओ की शिक्षा में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके अभिभावको के सहयोग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं दिखाई देता है।

पहाड़ियाँ, के एल. (2006) मादक पदार्थों का सेवन करने वाले तथा नहीं करने वाले परिवार के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया इस अध्ययन का उद्देश्य– मादक पदार्थों का सेवन करने वाले एवं नहीं करने वाले परिवार के किशोरों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन तथा इस प्रकार के परिवार के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना था। इसका निष्कर्ष मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवार के किशोरों का समायोजन स्तर सामान्य परिवार के किशोरों की तुलना में कम पाया गया, तथा मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवारों के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध नहीं पाया गया।

पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन– पारिवारिक अनुशासन, पारिवारिक वातावरण में सम्मिलित होता है। परिवार के वातावरण के अन्तर्गत पूरे घर तथा परिवार का वातावरण आता है। इसके अन्तर्गत माता व पिता के आपसी संबंध, माता–पिता, भाई–बहन तथा सभी बच्चों के बीच आपसी संबंध, पूरे परिवार के सदस्यों के बीच तनावपूर्ण या प्रेमपूर्ण व्यवहार एवं आचरण, परिवार का पारिवारिक वातावरण कहलाता है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय– उच्च प्राथमिक विद्यालय से आशय कक्षा 6 से कक्षा 8 तक की छात्राओं से होता है।

शैक्षिक उपलब्धि– शैक्षिक उपलब्धि किसी विषय विशेष अथवा विषयों के समूहों के अवबोध, ज्ञान, समझ या दक्षता की माप प्रदर्शित करती है। साधारण अर्थ में विभिन्न शिक्षा संस्थाओं द्वारा निर्देशित पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर उसके तथ्यों को ग्रहण करने की कुशलता या निपुणता की योग्यता के रूप में हम शैक्षिक उपलब्धि को परिभाषित कर सकते है। बालक की शैक्षिक उपलब्धि मापने के लिए अनेक प्रकार की परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। परिवारों के प्रतिमानों में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, वे भारतीय संस्कृति की गतिशीलता के द्वारा हुए है। स्त्रियों और पुरूषों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन हुए है। परिवार का आकार दिन–प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। गांवों की अपेक्षा शहरों के परिवार अधिक छोटे होते जा रहे हैं। बच्चों पर भी आजकल परिवार का उतना नियन्त्रण नहीं रहा, जितना होना चाहिए, क्योंकि आजकल परिवार के प्रत्येक सदस्य अपने–अपने कार्यों व व्यवसाय आदि में अधिक व्यस्त रहते हैं। बच्चों पर पूर्णतः ध्यान नहीं रख पाते हैं। व्यावसायिक कार्यकलाप अधिक होने के कारण आज परिवार की संरचना में परिवर्तन आ रहा है। बालकों की शिक्षा की ओर अभिभावक अधिक ध्यान रखते हैं, इसका कारण है–देश में बढ़ती बेरोजगारी व सुविधाओं का अभाव। अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान तो काफी देते हैं लेकिन उन्हें चिंता इस बात की रहती है कि लिखने–पढ़ने के बाद भी रोजगार मिलेगा या नहीं।

निष्कर्ष–

शिक्षा समाज के सभी वर्गो को उत्पादक, उपयोगी तथा सुसंस्कृत नागरिक बनाकर देश के विकास मे अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। व्यक्ति समाज के अन्य व्यक्तियों के बारे मे सोचता है। लेकिन उससें अधिक वह अपने बारे मे अवश्य सोचता है। जिस प्रकार हम समाज के अन्य सदस्यों का प्रत्यक्षीकरण करते हैं और यह प्रत्यक्षीकरण हमारी अन्तरक्रिया को प्रभावित करता है। उसी प्रकार हम स्वयं को उद्दीपक मानकर उसका प्रत्यक्षीकरण करते हैं। जो हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहारों को प्रभावित करता है। जिसमें परिवारिक वातावरण का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. **मुक्वीन, जॉन (1997)** संकाय हेतु हस्त कौशल के विकास में सुगमता पूर्वक किशोर अधिगमकर्ताओं के महाविद्यालयी समायोजन का अध्ययन
2. **बेव, जुडी मौसस (1997)** व्यावसायिक महिलाओं की सेवानिवृति के संदर्भ में सामान्य विषय और समायोजन का अध्ययन
3. **ग्रीन्स, डी. एन. (1998)** स्टूडेन्ट फेलियट एण्ड एडजस्टमेन्ट
4. **भट्ट, सुधा (1991)**– पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन
5. **पाण्डे, आर0के0 (2000)** ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पूर्व किशोरावस्था की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया।
6. **बाला, निधि (2000)** माता के व्यवसाय एवं परिवार की आय का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन
7. **पीटर, पॉल (2002)** महाविद्यालय के चयन एवं उपस्थिति के प्रति अफ्रीकन, अमेरिकन एवं व्हाइट मेरी लेण्ड के माध्यमिक स्कूल के छात्रों की आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन
8. **शर्मा, मन्जू (2003)** छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं के पारिवारिक लगाव, समायोजन एवं अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन
9. **गुप्ता, मधु (2005)** शैक्षिक उपलब्धि पर परिवार की प्रकृति, पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावको की सहभागिता के प्रभाव का अध्ययन
10. **पहाड़ियाँ, के एल. (2006)** मादक पदार्थों का सेवन करने वाले तथा नहीं करने वाले परिवार के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन
11. **ढ़िगड़ा, रजनी, मनहस, सारिका एवं सेठी, नीतू (2007)** विद्यालय सम्बन्धि गतिविधियों में अभिभावकों की सहभागिता का अध्ययन
12. **वर्मा, जी. आर. एण्ड बाबू, बी. वी. (2007)** सन परफॉरमेन्स एण्ड डिजायर्ड फैमेली साईज इन ए रूरल कम्यूनिटी ऑफ वेस्ट गोदावरी डिस्ट्रीक्ट
13. **कुमार, हाकम (2009)** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एकल संतान व बहुसंतान परिवार के विद्यार्थिया की आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन